eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

महर्षि अरविंद घोष का सर्वांग योग वशिष्ठ चिंतन का स्वरूप

नीलम देवी[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधार्थी, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

महर्षि अरविंद घोष एक महान दार्शनिक एक राष्ट्रवादी योग गुरु कवि आदि थे। उन्होंने शिक्षा में योग शास्त्र के विकास में जो अपने विचारों की व्याख्या की वह हर तरह से मूल्यवान है उनकी शिक्षा का उद्देश्य बालक का पूर्ण रूप से विकास करना है इस मानव कल्याण की ओर बढ़ता है उनका सर्वांग योग भी आत्मा मोक्ष व कल्याण की भावना को विकसित करना ही नहीं बल्कि विश्व कल्याण की भावना को भी अपनाना है। अरविंद का मानना था कि मानक पूर्ण विकास कर इस संस्कृत जीवन में ईश्वर को प्राप्त कर सकता है इसका सिर्फ एक ही साधन है समग्र शिक्षा।

मुख्य कुंजी शब्द– महर्षि, सर्वांग योग, आध्यात्मिकता अतिमानस, अतिमानव, समग्र शिक्षा इत्यादि।

Introduction

आज के महान युग के मानव में भौतिक प्रगति तो कर ली लेकिन आध्यात्मिक रूप से जा रहा है। जिसकी वजह से भौतिक सुविधाओं से वंचित होता जा रहा है उसे सही सुख नहीं मिल पा रहा है इसका मुख्य कारण हमारे जीवन शैली है साथ ही साथ हमारे शैक्षिक उद्देश्यों में कमी आ रही है मनुष्य को अपने अनुसार आंतरिक व बाहरी विकास के लिए भौतिक के साथ आध्यात्मिक भूख की शांति के लिए एवं सारांश में कहे तो सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न दार्शनिक व शिक्षक भी दो के विचारों के माध्यम से अध्ययन कर सार तत्व ग्रहण करना होगा इन शिक्षाविदों में से एक महत्वपूर्ण नाम है महर्षि अरविंद घोष। इन कैस फॉर लोंग वॉक थे शैक्षिक चिंतन का स्वरूप का शिक्षा में अपना विशेष स्थान रखता है।

शोध का उद्देश्य–महर्षि अरविंद घोष के सर्वांग योग व शैक्षिक चिंतन का स्वरूप से अवगत कराना। महर्षि अरविंद घोष जीवन परिचय– महर्षि अरविंद घोष का जन्म 15 अगस्त कोलकाता की एक धनी परिवार में हुआ था। महर्षि अरविंद के पिता एक डॉक्टर के जिन पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा था। वह अरविंद को भारतीय प्रभाव को दूर रखते हुए अंग्रेजी शिक्षा वह सभ्यता के अनुसार शिक्षा करना चाहते थे। इसके लिए मात्र 7 वर्ष की आयु में ही उन्हें दोनों भाइयों के साथ इंग्लैंड भेज दिया। अरविंद बुद्धि के होने के कारण I-P-S-C की परीक्षा उतरन करली किंतु अंग्रेजी सरकार के अवसर नहीं बने पिता डॉक्टर करण घोष भारत में रहते हुए अपने पुत्रों को बंगाली पत्र में छपे भारतीय के प्रति दुर्व्यवहार का विवरण काट कर भेजा करते थे। जिसमें ब्रिटेन सरकार के द्वारा शोषण की कहानी होती थी। देश को आजाद करने की उनके अंदर इंग्लैंड में ही फूट पड़े सन 1893 में अरविंद भारत लौट उन्होंने 13 वर्ष बाद देश की सेवा के लिए नौकरी से इस्तीफा लिया। उन्होंने इंद्र प्रकाश पत्र विपिन चंद्र पाल की श्वंदे मातरमश पत्रिका में राजनीतिक लेख लिखे। एक अंग्रेजी अधिकारी किंम्सफोर्ड पर हमले की वारदात पर 4 में को 1908 में अरविंद को गिरफ्तार कर लिया गया उन्होंने 10 साल कारावास मिला इसी के चलते हुए अलीगढ़ जेल में उन्होंने आती मानस तत्व का अनुभव किया। इसके बाद उन्होंने जीवन का ज्यादातर समय योग साधन में बिताया। सन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

1926 में पांडिचेरी में उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की। यहीं पर 24 वर्षों तक सर्वांग योग की साधना की 40 वर्षों तक यहां महर्षि अरविंद ने कर्म योगी आध्यात्मिक नेता एवं सर्वांग योगी के रूप में कार्य करते हुए 5 सितंबर 1950 को समाधि में लीन हो गए।

महर्षि अरविंद की सर्वांग लोक साधना– भारत में नहीं पूरे विश्व में उनके योग साधना का आविष्कार हुए जैसे ज्ञान लोग कर्म योग राजयोग शक्तियों आदि परंतु उनके नियम प्रक्रिया विधि बहुत कठिन है कि इन्हें ग्रहस्थ जीव करने वाला व्यक्ति आसानी से नहीं कर सकता। अरविंद घोष ने एक ऐसा योग बताया जिसे मनुष्य ग्रहस्थ जीवन मैं भी आसानी से कर सकता है वह योग है सर्वांग योग सर्वांग योग है प्रणाली है जिसमें संस्कृत जीवन व आध्यात्मिक जीवन के बीच सर्वे विजय सामाजिक स्थापित हो सके अर्थात बिना जीवन को कोई बिना भगवान को प्राप्त करना मानव जीवन के अंदर भगवान व प्रकृति का मिलन स्थापित करना। सर्वांग योग केवल अपनी आत्मा की मिट्टी के लिए प्रयास नहीं करता वरन् विश्वात्मा भगवान के अंदर समस्त मानव समाज को पूर्णत्य प्रदान करना चाहता है।

महर्षि अरविंद घोष के सर्वांग योग व शैक्षिक चिंतन संबंधी विचार वर्तमान योग में थी प्रासंगिक व साथ है। महर्षि अरविंद के शैक्षिक विचार–माहेश्वरी अरविंद ने अपने दार्शनिक सिद्धांत प्रस्तुत किया लेकिन इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता अनुभव हुई। इसीलिए इन्होंने नेशनल सिस्टम ऑफ एजूकेशन में शिक्षा की राष्ट्रीय योजना संबंधी विचार प्रस्तुत किए।

शिक्षा का विकास–महर्षि अरविंद के संप्रत्य अनुसार शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान चरित्र संस्कृति को महत्व देती है। उन्होंने शिक्षा के तीन दिशाओं में वर्गीकृत किया है।

1– प्राचीन अध्यात्म ज्ञान की पूर्ण स्थापना करना।
2– उसे अध्ययन ज्ञान का दर्शन, साहित्य, कला, और विज्ञान का प्रयोग करना।
3– वर्तमान समस्याओं का भारतीय आत्म ज्ञान की दृष्टि के समाधान खोजना आत्मा प्रदान की स्थापना करना।

शिक्षा के उद्देश्य– महर्षि अरविंद के अनुसार शिक्षा के दो प्रमुख कार्य हैं

1– मानव को अपने स्वयं के विकास ग्रंथ का स्पष्ट ज्ञान होना।
2– मानव को सत्य तक पहुंचाने की शक्ति का विकास करना। महर्षि अरविंद अंस शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा मानव को मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, विकास हो सके। जिसका संपूर्ण रूप से एक एकीगृत होकर विकास कर सके।
पाठ्यचर्या व शिक्षण विधियां–महर्षि अरविंद ने मानव के समग्र विकास की बात कही है अतः वह इस प्रकार है।
शारीरिक विकास हेतु–खोल, योग अन्य शारीरिक गतिविधियां जिससे स्वास्थ्य विभाग शक्ति का विकास हो सके।
– मानसिक विकास– ज्ञान, तर्क, समीक्षात्मक विकास द्वारा मस्तिष्क पर बल दे सके।

– भावनात्मक विकास– साहस, प्रेम, करुणा जैसी भावनाओं का विकास करके जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सके।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

शिक्षक–शिक्षार्थी– महर्षि अरविंद के अनुसार शिक्षण की भूमिका केवल पर्थ प्रदर्शन या सुविधा प्रदाता मात्रा होना चाहिए। शिक्षक को शिक्षार्थी किसी विशिष्ट आवश्यकताओं सूचियां व क्षमताओं की गहन समझ होनी चाहिए जिससे वह बालकों को एक वातावरण दे सके जहां बालक को सर्दीन विकास हो सके।

निष्कर्ष– महर्षि अरविंद घोष ने एक ऐसी शिक्षा नीति बताई जिससे मानव के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू के विकास पर जोड़ दिया है क्योंकि महर्षि अरविंद के अनुसार शिक्षा हकीकत में आत्मा खोज करके आत्म साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है जहां उसकी पूरी क्षमता को विकसित पर एक पूर्ण व एकीकृत मानव बनने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– घोष अरविंद–दा सिंथेसिस का योग एडिशन नेवस्त कोलकाता
2– अग्नि शिखा, श्री अरविंद आश्रम पांडिचेरी
3– अग्रवाल पावन व मिश्री लक्ष्मी
4– श्री अरविंद सोसायटी, जयपुर शाखा, राजस्थान
5– अखंड ज्योति (ऑल वर्ल्ड गयात्री परिवार) जनवरी 1960 वर्जन 2 (पांडे श्री जीवन डेत)
6– मदन पूनम, पांडे रामशकल 2015 समसान पाक भारत और शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
7– अरविंद दित्य जीवन, अनुवादक श्याम सुंदर झुनझुनवाला प्रशासन श्री अरविंद सोसायटी पांडिचेरी।